स्कूल जाना मुझे कभी पसन्द नहीं रहा

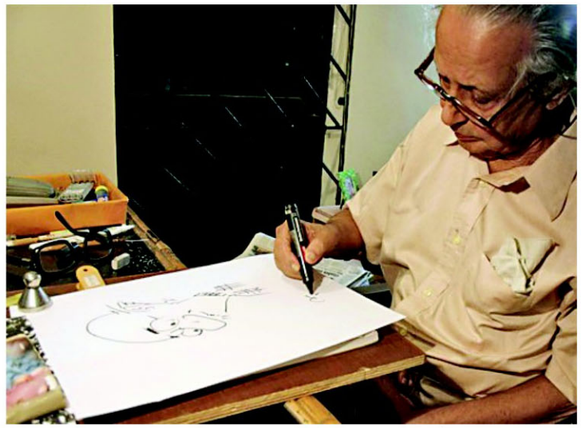

आर के लक्ष्मण

एक कार्टूनिस्ट को बहुत-सी अलग-अलग चीज़ें सोचनी पड़ती हैं। कभी वह गन्दगी पर कार्टून बनाता है तो कभी अन्तरिक्ष-यात्रा पर जा रहे किसी यात्री पर। मैं अपनी बात "कॉमन मैन" (आम आदमी) के ज़रिए कहता हूँ। सालों से कह रहा हूँ और अब तो यह कॉमन मैन मेरी पहचान बन गया है। इस कॉमन मैन में सभी हैं – मैं भी, तुम भी और कोई और भी।

मैंने महाराजा कॉलेज मैसूर से अपनी पढ़ाई की। बचपन की यादें अभी भी ताज़ा हैं। कॉलेज के समय से ही मैं बड़े भाई आर. के. नारायण (*मालगुडी डेज़* के लेखक) की कहानियों के लिए चित्र बनाने लगा था। चित्रकला में मेरी बचपन से ही रुचि थी। कॉलेज की पढ़ाई पूरी हुई तो मैं नौकरी के लिए दिल्ली आया। यहाँ मैं *हिन्दुस्तान टाइम्स* के दफ्तर गया तो उन्होंने कहा कि अभी मुझे कुछ अनुभव नहीं है। पहले मुझे छोटे अखबार में काम करना चाहिए। *फ्री प्रेस जर्नल,* बम्बई ने ऐसी कोई शर्त नहीं रखी। तो यहाँ काम शुरू हुआ। यहाँ बाल ठाकरे मेरे साथ ही कार्टून बनाते थे। मेरा काम ठीक चल रहा था। एक दिन अखबार के मालिक ने मुझसे कहा कि मुझे कुछ लोगों के कार्टून नहीं बनाने चाहिए। मेरे कार्टून छपने बन्द हो गए। उस समय मैं 23 साल का था। मैंने विक्टोरिया (उन दिनों आने-जाने के लिए इसी का इस्तेमाल होता था) पकड़ा और *टाइम्स ऑफ इण्डिया* के दफ्तर पहुँच गया। तब से मैं इसी अखबार के दफ्तर में बना हुआ हूँ। यहाँ काम करने की पूरी आज़ादी है। कार्टूनिस्ट के लिए हर दिन नया होता है। हर दिन मैं सोचता हूँ कि आज क्या करूँगा? पर फिर कुछ न कुछ करके मेरी नौकरी बच ही जाती है। ऐसा मेरे साथ कई बार हुआ।

मैं स्कैच कैसे बनाने लगा यह कहानी भी बड़ी दिलचस्प है। मैसूर के हमारे घर में एक खिड़की थी। इसमें एक चौकोर काँच लगा था जिसमें कई छोटे रंगीन टुकड़े थे। एक बार काँच टूट गया। काँच के टुकड़े चमकने लगे। मैंने कुछ टुकड़े उठा लिए। एक के बाद एक कई रंगों के काँच से मैंने दुनिया देखी। रंग-बिरंगी दुनिया देखने का अजब अनुभव था यह। जिस रंग का काँच होता सारी चीज़ें वैसी ही दिखतीं। उस समय घर में कोई भी मुझे ऐसा करने से रोकता नहीं था। सभी अपने-अपने काम में व्यस्त रहते थे। माली काका और मेरा प्यारा कुत्ता रोवर ही मेरे साथ रहते थे और उन्हें मुझे ऐसा काम करने से रोकने की कोई चिन्ता नहीं थी। तो यहीं से रंग और दुनिया अच्छे लगने लगे। रोवर ग्रेट डेन नस्ल का था। उसके साथ मैं खूब खेलता। माली काका मुझे कहानियाँ सुनाते। उनकी कहानियों में अक्सर भूत होते। अब तो माता-पिता मानते हैं कि बच्चों को भूत की कहानियाँ सुनाकर डराना नहीं चाहिए पर मैं मानता हूँ कि बच्चे और किसी चीज़ से डरें इससे अच्छा है कि वो भूत से ही डरें। माली काका के पास सुनाने को बहुत-सी कहानियाँ होती थीं और हर कहानी में वे खुद ही हीरो होते। कहानियों में वे कुछ ऐसा करते कि मैं चुपचाप कहानी सुनते चला जाता। उनके लिए मैं ही सुनने वाला था। इसलिए हमारी जोड़ी खूब जमती।

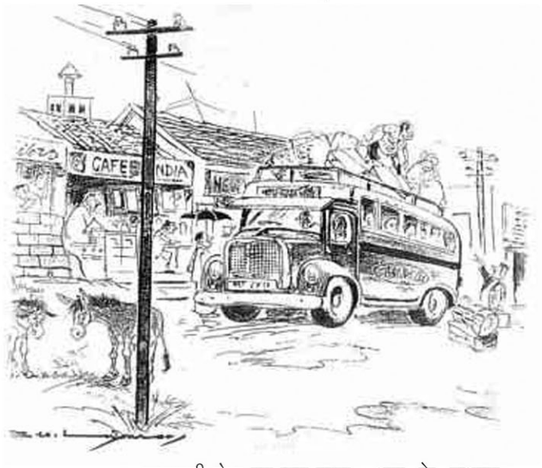

मालगुड़ी डेज़ का एक दृश्य - आर. के. लक्ष्मण

लक्ष्मण का "कॉमन मैन"

घर में दीवार पर पेन्टिंग बनाने की मुझे छूट थी। एक बार मैंने एक पत्ती का चित्र बनाया तो मेरे टीचर ने मुझे खूब शाबाशी दी। मुझे भी अच्छा लगा। घर के बगीचे में जब मैं कौए को देखकर चित्र बनाता तो माँ कहती कि यह शनि भगवान का वाहन है और भगवान तुझे खूब तरक्की देंगे। तरक्की का तो पता नहीं पर कौए की पेन्टिंग बहुत दूर-दूर तक चली गई है। लोगों को खूब पसन्द भी आई। आज भी कौआ मेरे कार्टून में बना हुआ है।

कुछ मज़ेदार बातें करें...

हमारे घर में एक गैराज हुआ करता था। इस गैराज में बिच्छू और मकड़ी के जाले बहुत थे। बिच्छू ढूँढने के लिए उन दिनों हम दोस्त गैराज में घुस जाते थे। बिच्छू दिखता तो उसे पत्थर मारते और लकड़ी से इधर से उधर धकेलते। मेरे भाई को दूसरे काम में मज़ा आता था। वह टिड्डे पकड़ने में माहिर था। टिड्डे पकड़कर वह उनको ट्रेनिंग देकर उनका सरकस खोलना चाहता था। हम टिड्डे को पकड़कर उसे एक अच्छे से बॉक्स में घास के साथ रखते। रसोई से चुराकर कुछ चीज़ें बॉक्स में डालते पर टिड्डा दूसरे दिन तक ज़िन्दा नहीं रहता। तुम्हें लगेगा कि यह जानवरों के साथ ठीक बर्ताव नहीं है पर यह तो बचपन की बात है। बड़े होने पर हम खुद ही समझ जाते हैं कि जानवरों को सताना ठीक नहीं है। पर

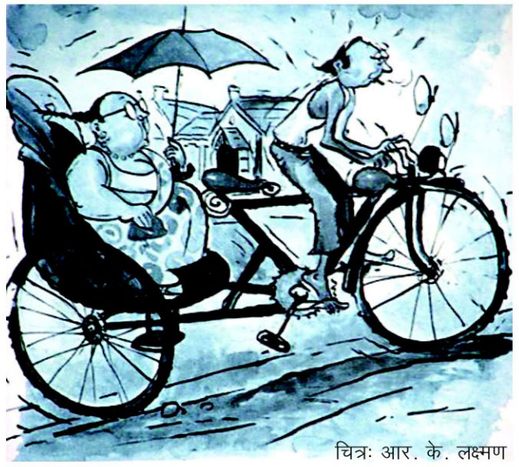

चित्रः आर. के. लक्ष्मण

माँ के बारे में

माँ खाने में कई प्रयोग करती थी। एक बार उसने किताब में पढ़कर हमारे लिए दन्तमंजन जैसा कुछ भी बना दिया था। पापड़ बनाना और छत पर कुछ चटपटी चीज़ों के साथ माँ की याद आज भी मन में ताज़ा है। माँ को पेन्टिंग इकट्ठा करना अच्छा लगता था। उन्हें टैनिस और बैडमिन्टन खेलने का बहुत शौक था। शतरंज में तो उसे कोई हरा ही नहीं पाता था। माँ कभी स्कूल-कॉलेज तो नहीं गई पर उसे बड़े होने पर भी सभी नहीं समझते हैं वरना दुनिया में इतनी लड़ाइयाँ क्यों होतीं? खैर, तुम तो अपनी तरह से अपने खेल खेला करो। खेलों के मज़े लिया करो।

अब वापस बगीचे पर आते हैं। मेरे बगीचे में चींटियों के अड्डे भी हुआ करते थे। मेरे भाई को चींटियों के अड्डे देखने में बड़ा मज़ा आता था। वह कहता था कि चींटियों का रहना बड़ा व्यवस्थित होता है। उनकी दुनिया में भी गलियाँ, ईं की एक कहानी जब पहली बार किसी पत्रिका में छपी और उसे उसपर कुछ ईनाम भी मिला तो पूरे घर में खुशियाँ मनाई गईं। खेल के मैदान, पुलिस स्टेशन और सिनेमा हॉल होते हैं। पर समझ नहीं आता कि वे अपनी फिल्मों के पोस्टर क्यों नहीं लगाती हैं? वो इनकी बहुत कहानियाँ बनाता था। कुछ कहानियाँ सुनकर मुझे खूब मज़ा आता। भाई की एक कहानी जब पहली बार किसी पत्रिका में छपी और उसे उसपर कुछ ईनाम भी मिला तो पूरे घर में खुशियाँ मनाई गईं।

भाई ने मुझे बहुत-सी बातें सिखाईं। उसकी लिखी कहानियों *स्वामी और उसके दोस्त* पर मैंने ही कार्टून बनाएँ थे। मालगुड़ी की कहानी हमारे अपने बचपन की कहानियों से निकली हैं। ये सभी को पसन्द आईं। अच्छी कहानी पसन्द आती ही है। तुमने स्वामी की कहानी नहीं पढ़ी हो तो कहीं से जुगाड़कर ज़रूर पढ़ना।

मुझे स्कूल अच्छा नहीं लगता था। कईयों की तरह मुझे भी स्कूल जाने से चिढ़ होती थी। जैसे-तैसे मैंने अपनी पढ़ाई पूरी की। मुझे लगता था कि स्कूल से ज़्यादा तो मैं बाहर सीख सकता हूँ।

स्कूल में तो हम कुछ ही बातें सीखते हैं ज़्यादातर तो घर और आसपास से ही सीखा जाता है। मैं कभी अव्वल नहीं आया पर अगली कक्षा में जाने जितने नम्बर हर बार आ ही जाते थे। बचपन में काँच के टुकड़ों से देखी गई दुनिया मज़ेदार लगी थी जो आज भी लग रही है। यह मज़ा बना रहे तो ज़्यादा अच्छा। बचपन को याद करता हूँ तो बहुत अच्छा लगता है। क्या दिन थे वे भी!

• तुम्हारा कॉमन मैन

प्रस्तुतिः कपिल पंचोली